|  |
| --- |
| 31. August 2025 |
| **22. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Sir 3,17-18.20.28-29; Zweite Lesung: Hebr 12,18-19.22-24a; Evangelium: Lk 14,1.7-14 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2 | Zu dir, o Gott, erheben wir |
|  | GL 417, 1-4 | Stimme, die Stein zerbricht |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 128 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 168, 1+2 | Gloria. Ehre Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 68, 4-7. 10-11 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 646, 2 | Den Geist seines Sohnes |
|  | oder |  |
|  | GL 400, 1+2 | Ich lobe meinen Gott |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 7 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Nehmt mein Joch auf euch und lernt von mir:* |
|  | *denn ich bin gütig und von Herzen demütig.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 491, 1+2! | Ich bin getauft |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 146, 1+2+4 | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | GL 186, 1-3 | Was uns die Erde Gutes spendet |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 129 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 216, 2+3 | Mir armen Gast bereitet hast |
|  | GL 357, 2+7 | Du meine Perl, du werte Kron |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 479, 1-3 | Eine große Stadt ersteht |